

संपादकीय



रेप के खिलाफ लो पहले से सख्त

को लकाता के आरजी कर मैडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक मरिला द्वारा डॉक्टर के रेप और मर्डर के बाद से पश्चिम बंगाल में देखे जा रहे असतोष का कुल हासिल और 'अपराजिता' विवेक का विधानसभा में सर्वसम्मति से पारित होना है, तो इसे निराशजनक ही कहने होता है। रेप पर नया कानून बनाने की इस पहल को जानकार लगभग एक स्वर में देखे जा रहे असतोष का कुल हासिल और 'अपराजिता' विवेक का विधानसभा में सर्वसम्मति से पारित होना है, तो इसे निराशजनक ही कहने होता है। इसकी सबसे बड़ी बाज़ यह है कि देश में रेप के खिलाफ कड़ा कानून पहले से ही है। 2012 में मिल्ली में हुए निर्भया काड़ के बाद उभे अधूरूप जनन असंतोष का एक परिणाम कानून में बदलाव के रूप में भी आया था। उसका काफी प्रचार भी हुआ था। बाबूजूद इस सकें, रेप के आकड़ों में तो कभी नहीं ही आयी, देश को सिहारा देने वाली कई बड़ी घटनाएं भी अंजाम लेती रहीं। दरअसल, रेपिस्टों के लिए मौत की सजा की मांग जनवानाओं के तात्कालिक उभार को शांत करने में भले साहायक हो, एकपटर्स पहले से कहते रहे हैं कि इससे अपराजित को काबू करने में खास मदद नहीं मिलती।

उलटे यह डर रहा है कि रेपिट को मार ही न डाले, व्यापक उसे पता होता है कि रेप की सजा भी फासी हो सकती है, लेकिन हत्या के बाद विविटम द्वारा पहचाने जाने की संभावना खत्म हो जाती है। कानून में लक्ष्यान्वयन का प्रावधान करना है।

प्रावधान करना मुश्किल नहीं। असल संघर्ष तब शुरू होता है जब बात अपराध साबित कर अपराधी को सजा दिलाने की बात आती है। यहां न केवल अनियोजन पथ को कठत-कठत पर मुश्किल द्वारा पीड़ित है, बल्कि विविटम के लिए भी इस लाई लड़ाई है। अपराधी को जहाज कठिन होता है। यहां लाई लड़ाई में टिके रहना कठिन होता है।

अभिमत आजाद सिपाही

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लक्ष्यान्वयन को लुभाने के लिए हर उपाय करने में जुटा है। धीरे-धीरे पर्टीटक यहां आकर्षित हो रहे हैं। एक खाली द्वीप टाटा समूह को पांच सितारा इस्टर्ट बनाने के लिए दिया गया है। अन्य द्वीपों पर भी छोटे-छोटे इस्टर्ट तैयार हो रहे हैं। लोगों की सुविधा और मनोरंजन का ख्याल दखने के लिए कई कदम उठाये जा रहे हैं।

एक 'अलग दुनिया' का एहसास कराता है लक्ष्यान्वयन



प्रशंसात झा

लक्ष्यान्वयन भारत का हिस्सा है। यह एहसास होना बहुत ही मुश्किल है। वहां तक पहुंचने के ज़ंगावत, हालात विश्वासी और व्यवस्था व सौदर्यता किसी 'द्वीपी दुनिया' का एहसास करा देता है।

पहुंचने की ज़ंगावत इसलिए की सभवाः भारत का यही एक हिस्सा है, जहां जाने के लिए 'परमिट' यानी अनुमति पहले लेने की ज़रूरत होती है। वहां तक पहुंचना बहुत ही दुर्भाग्य है। एक-दो छोटे हवाई जहाज और एक-दो पानी के जहाज ही उपलब्ध हैं।

वह भी जब द्वीप पर छोड़ कर चले जाते हैं, तो वहां से निकलने का कोई ग्रास नहीं।

विश्वासी की भारत के शेष हिस्सों से खुद



को कटे हुए का अनुभव होने लगता है।

विजली और पानी की व्यवस्था शहरों की तरह सामान्य नहीं। समुद्र का खाना पानी को मीठा बनाया जाता, तो जेरेट से पूरे शहर को बिजली मिलती है।

सौंदर्यता और शांति ऐसी की पटकों को खो चकता ही रहता है। मुझे भी ज्ञानखंड विधानसभा के पीपीसी कमर्ती सदस्य के रूप में पिछले सप्ताह तक एक वार्षिक उल्लंघन करना था।

लक्ष्यान्वयन की तरफ लक्ष्यान्वयन का प्रावधान करना मुश्किल नहीं। असल संघर्ष तब शुरू होता है जब बात अपराध साबित कर अपराधी को सजा दिलाने की बात आती है। यहां न केवल अनियोजन पथ को कठत-कठत पर मुश्किल द्वारा पीड़ित है, बल्कि विविटम के लिए भी इस लाई लड़ाई है। अपराधी को जहाज कठिन होता है। यहां लाई लड़ाई में टिके रहना कठिन होता है।

लक्ष्यान्वयन की तरफ लक्ष्यान्वयन की अनुभावी स्थिति एक द्वीपसमूह है।

पहले इन द्वीपों को 'लक्कादीव-मिनिकार्ड-अमिनीदिवि द्वीप' के नाम से जाना जाता था। यह द्वीपसमूह भारत का एक अनाम संदर्भ से परिलक्ष्य क्षेत्र के एक अनाम संदर्भ से मिलता है। द्वीपों का उल्लंखण्ड इस पूर्व छठी शताब्दी की बैदू जनक वकायों में भी जाना जाता था।

नाम से जाना जाता है।

सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।

इसका कुल सतही क्षेत्रफल सिर्फ 32 वर्ग किमी (12 वर्ग मील) है। कवररती इसकी राजधानी है।

चूंकि इन द्वीपों पर कोई आदिवासी आवादी नहीं है, इसलिए विशेषज्ञ इन द्वीपों पर मानव के बसने का अलग-अलग इतिहास मुज़ाते हैं।

नाम से जाना जाता है।



जिला परिषद के उपाध्यक्ष आलोक सिंह के पिता हुए पंचतत्व में विलिन



हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। पलामू जिला के जिप उपाध्यक्ष सह जामुमो के वरिष्ठ नेता आलोक कुमार सिंह ऊर्फ दुट्टी सिंह के पिता श्यामदेव सिंह (96) का निधन बुधवार को उनके पैतृक गांव महुंअरी में हो गया। उनका अंतिम संस्कार गुरुवार को दैवरी सोन नदी स्थित मुक्तिधाम में किया गया। इस दैवान निकली शब यात्रा में काफी संख्या में लोग शामिल हुये। बड़े पुरे उमेर सिंह ने पिता को मुख्यांग दी। उनके निधन पर विधायक कमर्त्तन कुमार सिंह, राजद के प्रदेश अध्यक्ष बल्लू बलराम एवं संचालन मंडल महामंत्री सनी गुप्ता ने की। बैठक में बृथ स्तर पर भाजपा को मजबूत करने का निर्णय लिया गया। कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया गया की सभी बूझों पर जाकर बैठक करें और अपनी संसदीकी जामुमो के जिला अध्यक्ष राजेंद्र सिंह, एजाज हुसैन, वर्षीय कुमार सिंह, डॉ एजाज आलम, शिवांश चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रंधीर कुमार सिंह आदि ने शोक संवेदन व्यक्त की है।

हरिहरगंज में दो घरों में घोरी

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के मुरम्खा और कुरहत कट्टैया गांव में चोरों ने बुधवार की रात दो घरों में चोरी की घटना को अंजाम दिया। इस मामले में गुरुवार को हरिहरगंज पुलिस ने भुक्तभोगियों की शिकायत पर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक सबसे पहले मुरम्खा गांव के कई घरों का दरवाजा बाहर से बढ़ कर दिया। जिसके बाद एक ही घर के अंदर में रहे नरेश राम, और अनिमें कुमार के कमरे के दरवाजे की ताला तोड़क घुसे चोरों ने तलाशी ली, लेकिन कुहान ही घरों ने बक्सा, एक किलोमीटर दूर हड्डवा स्थान पर फेंक दिया। दूसरी घटना कुरहत गांव निवारी जितेंद्र कुमार सिंह के घर में हुई। वहाँ भी चोरों ने चोरी का प्रयास किया। इस मामले में भुक्तभोगियों ने गुरुवार को एक जोड़ी पालाल, बिछिया, अंगूठी और ननीटी चोरी होने का आरोप लगाते हुए अजाता चोरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराया है। इस संबंध में पुनर्संहिता ने गुरुवार को 50 से 60 हजार रुपये के आभूषण चोरी होने की शिकायत मिली है। पुलिस जांच कर रही है।

हुसैनाबाद के सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में धूमधाम से मना शिक्षक दिवस



हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। सर्वेपल्ली डॉ गांधीकृष्णन की जयंती गुरुवार को हुसैनाबाद प्रांगण के विभिन्न विद्यालयों में धूमधाम से मनाया गया। एक सिंह कॉलेज, शहीद भगत सिंह इंटर कलाकारी, अरीपीएस पब्लिक स्कूल, प्लस-2 बालिका उच्च विद्यालय, बकरी उच्च विद्यालय, प्रजापिता ईश्वरिय विश्वविद्यालय, राजकीय कृत मध्य विद्यालय, सरसवी शिशु विद्यालय, बून पब्लिक स्कूल, लक्ष्मी शिशु विद्यालय एवं स्कूल, दक्ष स्कूल, समता स्कूल, सर्वोत्तम विद्यालयांती, किंद्रियांन पब्लिक स्कूल, डिवाइन पब्लिक स्कूल और पाराडाइस पब्लिक स्कूल आदि में सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों में सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन की प्रतिमा पर मालायात कर उनके नवान तम प्रादेश करने का आवश्यक गति की गया। छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक नवी गंभीर-संर्वानन्दक का मंचन कर लोगों की बाह्यावाही लौटी। इस दैवान शिक्षक की महाता पर विस्तृत जानकारी दी गई। प्रधानान्यापक ने शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए डॉ राधाकृष्णन के जीवन की महत्वपूर्ण पहलों से अवगत कराया। कहा कि शिक्षक दिवस गुरु और शिष्य के बीच बने बेहतर संबंध के साथ गुरु के प्रति कृतज्ञता जापित करने का त्योहार है।

सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम में कई मामले का निष्पादन

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। हरिहरगंज नगर पंचायत कार्यालय परिसर में आयोजित सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम के दैवान गुरुवार को कई मामलों का मौके पर ही निष्पादन किया गया। इस दैवान कार्यालयक प्राधिकारी के फैजूरु रहमान अंसारी ने 5 लोगों को मूल्य प्राप्त पत्र और दीनदालय अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के सेलफ एन्टर्प्रायट प्रोग्राम ईडीविजुअल के तहत पांच दुकानदारों को 25-25 हजार रुपय का चेक प्राप्त किया, जबकि गुरु माता स्वयं सहायता समूह को 65000 रुपय त्रया दिया गया। इस मौके पर शहर प्रबंधक नज़्बुला अंसारी, विचित्रा कुमारी, सीआरपी अनिता कुमारी, शहदा अंजुम और लालमुनी कुमारी आदि उपस्थित थीं।

गुरु ही हमारे सही मार्गदर्शक : अविनाश देव

शिक्षक दिवस पर संत मरियाम विद्यालय में आयोजित हुआ समारोह



आजाद सिपाही संवाददाता (मंदिरीगढ़) भारीतीय सभदता में गुरु ही एक ऐसा व्यक्तित्व है जिनके दोषदानों का सम्पादन समाज सदैव करता है। गुरु ही अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाकर लालक्ष तक पहुंचते हैं। जिनके सम्मान के लिए शिक्षक दिवस की पूर्व संघर्ष में संत मरियाम विद्यालय प्रांगण में गुरुओं का श्रुतिपल्ली डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर मालायात हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर मालायात के साथ हुआ। इसके बाद विद्यालय प्रबंधन की ओर से सभी शिक्षकों को उपहार देकर संवेदन से गमन की जाती है। जिनकी गायक अमरेश राज सिंह, अंकित गांव की गायिका अंकित दास के अनुसार हालांकार बदलते रुप से पढ़ा देना

हुसैनाबाद की छह सड़कों को मिली स्वीकृति

हुसैनाबाद का विकास ही मेरी प्राथमिकता: कमलेश

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। विधानसभा क्षेत्र में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत छह महत्वपूर्ण सड़कों को स्वीकृति मंडल अध्यक्ष संजय कुमार राजद एवं संचालन मंडल महामंत्री सनी गुप्ता ने की। बैठक में बृथ स्तर पर भाजपा को मजबूत बैठक हुई। विधायक कमलेश कुमार सिंह ने बताया कि उनकी अनुसंशंक के आलोक में हुसैनाबाद व हैदरनगर प्रखंड में छह सड़कों के निर्माण की स्वीकृति मिली है। अब इन सड़कों के निर्माण के लिए दो दिनों में निवारा निकाल की उम्मीद है। बताया कि क्षेत्र भ्रमण के दैवान द्वारा गांव से दूर ही दूर से शिवायपुर, नदी और दूरस्तर बरनीदाह में रोड से कुट्टी सर्यु नदी और दूरस्तर बरनीदाह में रोड से लोहपुरा रोड चहका भाया बरवांडी तक सड़क निर्माण शामिल है। विधायक ने बताया कि अब क्षेत्र की लगभग सभी सड़कों का स्वीकृति दिलाने का काम उन्होंने किया है। अधिकांश सड़कों का निर्माण की चाया की जा चुकी है। कुछ पर कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि वह लगातार समस्याओं के समाधान कराने की दिशा में प्रयोगस्वरूप रहते हैं।



विधायक कमलेश सिंह।

कराने की अनुसंशंक की थी। जिसकी निवारा निकाल दी गई है। बताया कि क्षेत्र भ्रमण के दैवान द्वारा गांव से दूर ही दूर से शिवायपुर, नदी और दूरस्तर बरनीदाह में रोड से लोहपुरा रोड चहका भाया बरवांडी तक सड़क निर्माण शामिल है। विधायक ने बताया कि अब क्षेत्र की लगभग सभी सड़कों का स्वीकृति दिलाने का काम उन्होंने किया है। अधिकांश सड़कों का निर्माण की चाया की जा चुकी है। कुछ पर कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि वह लगातार समस्याओं के समाधान कराने की दिशा में प्रयोगस्वरूप रहते हैं।

बनाव नहीं होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

बनाव होते पुराना बड़ेपुर तक, महुंअरी पंचायत के मिराहाड़ीहाड़ी।

